

## ॥ तैत्तिरीय ब्राह्मणम् ॥

॥ चतुर्थः प्रश्नः ॥

### ॥ तैत्तिरीयब्राह्मणे तृतीयाष्टके चतुर्थः प्रपाठकः ॥

ब्रह्मणे ब्राह्मणमालभते। क्षत्राय राजन्यम्। मरुद्भ्यो वैश्यम्।  
तपसे शूद्रम्। तमसे तस्करम्। नारकाय वीरहणम्। पाप्मने  
क्लीबम्। आक्रयायायोगूम्। कामाय पुङ्श्चलूम्। अतिक्रुष्टाय  
मागधम्॥ १ ॥

गीताय सूतम्। नृत्ताय शैलूषम्। धर्माय सभाचरम्। नर्माय  
रेभम्। नरिष्ठाय भीमलम्। हसाय कारिम्। आनन्दाय  
स्त्रीषखम्। प्रमुदे कुमारीपुत्रम्। मेधायै रथकारम्। धैर्याय  
तक्षाणम्॥ २ ॥

श्रमाय कौलालम्। मायायै कार्मारम्। रूपाय मणिकारम्।  
शुभे वपम्। शरव्याया इषुकारम्। हेत्यै धन्वकारम्। कर्मणे  
ज्याकारम्। दिष्टाय रज्जुसर्गम्। मृत्यवे मृगयुम्। अन्तकाय  
श्वनितम्॥ ३ ॥

सन्धये जारम्। गेहायोपपतिम्। निर्ऋत्यै परिवित्तम्।  
आत्यै परिविविदानम्। अराध्यै दिधिषूपतिम्। पवित्राय  
भिषजम्। प्रज्ञानाय नक्षत्रदर्शम्। निष्कृत्यै पेशस्कारीम्।  
बलायोपदाम्। वर्णायानूरुधम्॥ ४ ॥

नदीभ्यः पौञ्जिष्टम्। ऋक्षीकाभ्यो नैषादम्। पुरुषव्याघ्राय  
 दुर्मदम्। प्रयुञ्ज उन्मत्तम्। गुन्धर्वाप्सराभ्यो ब्रात्यम्।  
 सर्पदेवजनेभ्योऽप्रतिपदम्। अवैभ्यः कितवम्। इर्यताया  
 अकितवम्। पिशाचेभ्यो बिदलकारम्। यातुधानैभ्यः  
 कण्टककारम्॥५॥

उत्थादेभ्यः कुञ्जम्। प्रमुदे वामनम्। द्वार्यः स्नामम्।  
 स्वप्रायान्धम्। अधर्माय बधिरम्। संज्ञानाय स्मरकारीम्।  
 प्रकामोद्यायोपसदम्। आशिक्षायै प्रश्जिनम्। उपशिक्षाया  
 अभिप्रश्जिनम्। मर्यादायै प्रश्नविवाकम्॥६॥

ऋत्यै स्तेनहृदयम्। वैरहत्याय पिशुनम्। विविक्त्यै क्षुत्तारम्।  
 औपद्रष्टाय सङ्गहीतारम्। बलायानुचरम्। भूम्ने परिष्कन्दम्।  
 प्रियाय प्रियवादिनम्। अरिष्ट्या अश्वसादम्। मेधाय वासः  
 पल्पूलीम्। प्रकामाय रजयित्रीम्॥७॥

भायै दार्वहारम्। प्रभाया आग्नेन्धम्। नाकस्य पृष्ठायाभि-  
 षेत्तारम्। ब्रध्नस्य विष्टपाय पात्रनिर्णेगम्। देवलोकाय  
 पेशितारम्। मनुष्यलोकाय प्रकरितारम्। सर्वेभ्यो लोकेभ्य  
 उपसेत्तारम्। अवर्त्यै वधायोपमन्थितारम्। सुवर्गाय लोकाय  
 भागदुघम्। वर्षिष्ठाय नाकाय परिवेष्टारम्॥८॥

अर्मेभ्यो हस्तिपम्। जवायांश्वपम्। पुष्ट्यै गोपालम्।  
 तेजसेऽजपालम्। वीर्यायाविपालम्। इरायै कीनाशम्।

की॒ला॒लाय॑ सु॒राका॒रम्। भ॒द्राय॑ गृ॒हप॑म्। श्रेय॑से वि॒त्तध॑म्।  
अध्य॑क्षायानुक्ष॒त्तार॑म्॥९॥

म॒न्यवे॑ऽयस्ता॒पम्। क्रो॒धाय॑ नि॒स्रम्। शोका॑याभि॒स्रम्।  
उ॒त्कूल॑वि॒कूला॑भ्यां त्रि॒स्थिन॑म्। यो॒गाय॑ यो॒त्तार॑म्। क्षे॒माय॑  
विमो॑त्तार॒म्। वपु॑षे मानस्कृ॒तम्। शी॒ला॒याञ्जनी॑का॒रम्।  
निर्ऋ॑त्यै कोशका॒रीम्। य॒माया॑सूम्॥१०॥

य॒म्यै य॒मसू॑म्। अथ॑र्व॒भ्योऽव॑तोका॒म्। सं॒व॒त्स॒राय॑  
पर्या॑रिणी॒म्। प॒रि॒व॒त्स॒राया॑वि॒जाता॑म्। इ॒दा॒व॒त्स॒राया॑प॒-  
स्क॑द्व॒रीम्। इ॒द्व॒त्स॒राया॑ती॒त्व॒रीम्। व॒त्स॒राय॑ वि॒ज॑र्ज॒राम्।  
सं॒व॒त्स॒राय॑ प॒लि॒क्री॑म्। वना॑य वन॒पम्। अ॒न्यतो॑रण्याय  
दा॒व॒पम्॥११॥

सरो॑भ्यो धै॒व॒रम्। वेश॑न्ता॒भ्यो दा॑श॒म्। उ॒प॒स्था॑व॒री॒भ्यो  
बै॒न्द॑म्। न॒ङ्ग॒ला॒भ्यः शौ॒ष्क॒लम्। पा॒र्या॑य कै॒व॒र्तम्। अ॒वा॒र्या॑य  
मा॒र्गा॒रम्। ती॒र्थे॒भ्य आ॒न्द॑म्। विष॑मे॒भ्यो मैना॑लम्। स्व॒नै॒भ्यः  
पर्ण॑कम्। गुहा॑भ्यः कि॒रा॑तम्। सा॒नु॒भ्यो ज॑म्भ॒कम्। पर्व॑ते॒भ्यः  
कि॒म्पू॒रुष॑म्॥१२॥

प्र॒ति॒श्रु॒त्का॑या ऋ॒तु॒लम्। घो॒षाय॑ भ॒षम्। अन्ता॑य बहु॒वा॒दिन॑म्।  
अ॒न॒न्ताय॑ मू॒कम्। मह॑से वीणावा॒दम्। क्रोशा॑य तू॒णव॑ध्मम्।  
आ॒क्र॒न्दाय॑ दु॒न्दु॒भ्याघा॑तम्। अ॒व॒र॒स्प॒राय॑ शङ्ख॑ध्मम्।  
ऋ॒भु॒भ्यो॑जिनसन्धा॒यम्। सा॒ध्ये॒भ्यश्च॑र्म॒ष्णम्॥१३॥

बी॒भ॒त्सायै॑ पौ॒ल्क॒सम्। भू॒त्यै जा॒ग॒र॒णम्। अ॒भू॒त्यै स्व॒प॒नम्।  
तु॒लायै॑ वा॒णि॒जम्। वर्णा॑य हि॒र॒ण्यका॒रम्। वि॒श्वेभ्यो॑ दे॒वेभ्यः॑  
सि॒ध्म॒लम्। प॒श्चाद्दोषा॑य ग॒ला॒वम्। ऋ॒त्यै ज॒नवा॒दि॒नम्। व्यृ॒द्ध्या  
अ॒प॒ग॒ल्भ॒म्। स॒ंश॒राय॑ प्र॒च्छि॒दम्॥१४॥

ह॒साय॑ पु॒ंश्च॒लूमा ल॑भते। वी॒णावा॒दं ग॒ण॒कं गी॑ताय। याद॑से  
शा॒बु॒ल्याम्। न॒र्माय॑ भ॒द्रव॒तीम्। तू॒णव॒ध्मं ग्रा॑म॒ण्यं पा॑णिसङ्घा॒तं  
नृ॒ताय॑। मो॒दा॒यानु॑क्रोश॒कम्। आ॒न॒न्दाय॑ त॒ल॒वम्॥१५॥

अ॒क्ष॒रा॒जाय॑ कि॒त॒वम्। कृ॒ताय॑ स॒भा॒वि॒नम्। त्रेता॑या  
आ॒दि॒नव॒द॒र्श॒म्। द्वा॒प॒राय॑ ब॒हिः स॒दम्। क॒ल॒ये स॒भा॒स्था॒णुम्।  
दुष्कृ॑ताय॑ च॒रका॑चार्यम्। अध्व॑ने ब्र॒ह्मचा॑रि॒णम्। पि॒शा॒चेभ्यः॑  
सै॒ल॒गम्। पि॒पा॒सायै॑ गो॒व्य॒च्छ॒म्। नि॒र्ऋ॒त्यै गो॒घा॒तम्। क्षु॒धे  
गौ॒वि॒कृ॒तम्। क्षु॒त्तृ॒ष्णाभ्या॑न्तम्। यो गां वि॒कृ॒न्त॑न्तं मा॒ंसं  
भि॒क्ष॑मा॒ण उप॑तिष्ठते॥१६॥

भू॒म्यै पी॒ठस॒र्पि॒ण॒मा ल॑भते। अ॒ग्नये॑ऽस॒लम्। वा॒यवे॑  
चा॒ण्डा॒लम्। अ॒न्तरि॑क्षा॒य व॑श॒न॒र्ति॒नम्। दि॒वे ख॑ल॒तिम्।  
सू॒र्याय॑ ह॒र्य॒क्षम्। च॒न्द्रम॑से मि॒र्मि॒रम्। नक्ष॑त्रेभ्यः कि॒ला॒सम्।  
अ॒ह्ने शु॒क्लं पि॑ङ्ग॒लम्। रा॒त्रि॒ये कृ॒ष्णं पि॑ङ्गा॒क्षम्॥१७॥

वा॒चे पु॒रुष॑मा ल॑भते। प्रा॒णम॑पा॒नं व्या॒नमु॑दा॒नं स॑मा॒नं ता॒न्  
वा॒यवे॑। सू॒र्याय॑ चक्षु॒रा ल॑भते। म॒नश्च॒न्द्रम॑से। दि॒ग्भ्यः श्रो॒त्रम्।  
प्र॒जाप॑तये॒ पुरु॑षम्॥१८॥

अथै॒तान॑रूपेभ्य॒ आल॑भते। अति॑ह्रस्व॒मति॑दीर्घम्।  
 अति॑कृ॒श॒मत्य॑सलम्। अति॑शु॒क्ल॒मति॑कृष्णम्। अति॑श्लक्ष्ण॒-  
 मति॑लोमशम्। अति॑किरि॒ट॒मति॑दन्तुरम्। अति॑मिर्मि॒र॒मति॑-  
 मेमिषम्। आ॒शायै॑ जा॒मिम्। प्र॒ती॒क्षायै॑ कुमा॒रीम्॥१९॥

ब्रह्म॑णे गी॒ताय॑ श्रमा॑य स॒न्धये॑ न॒दीभ्य॑ उ॒त्सा॒देभ्य॑ ऋ॒त्यै भा॒या अ॒र्मेभ्यो॑ म॒न्यवे॑ य॒म्यै  
 दश॑दश॒ सरो॑भ्यो॒ द्वा॒दश॑ प्र॒ति॒श्रु॒त्का॑यै बी॒भ॒त्सा॑यै दश॑दश॒ हसा॑य स॒प्ताक्ष॑रा॒जाय॑ त्रयो॑दश॒  
 भू॒म्यै दश॑ वा॒चे षड॑थ॒ नवै॑कान्नवि॒ंशतिः॥१९॥

ब्रह्म॑णे य॒म्यै नव॑दश॥१९॥

ब्रह्म॑णे कुमा॒रीम्॥

हरिः ओम्॥

॥इति श्रीकृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीयब्राह्मणे तृतीयाष्टके चतुर्थः  
 प्रपाठकः समाप्तः॥